BA Part-II

History Notes

By- Dr. Durga Bhawani

BA Part II वारेन हेस्टिंग्स History (Sub)

वारेन हेस्टिंग्स का जन्म आर्कफोर्डशायर में चर्चिल नामक स्थान पर 6 Dec. 1732 ई० में हुआ था। उसके माता-पिता बचपन में ही स्वर्गवास हो गए तथा उसका पालन-पोषण उसके चाचा ने किया। उसकी शिक्षा वेस्ट मिनिस्टर स्कूल में हुई, वह एक तेज और परिश्रमी विद्यार्थी था। 1747 ई० में उसे परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के फलस्वरूप सम्राट की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। इसके दो वर्ष बाद उसके चाचा का भी देहान्त हो गया। अब उसे स्कूल छोड़ कर एक सम्बन्धी के घर जाना पड़ा जो ईस्ट इंडिया कम्पनी में डायरेक्टर था।

इस प्रकार, हेस्टिंग्स विश्वविद्यालय की शिक्षा से वंचित रह गया। 1750 में वह कलकत्ता पहुँचा और तीन वर्ष तक लिपिक के रूप में कार्य किया। 1753 में वह कासिम-बाजार भेज दिया गया और दो वर्ष के बाद कलकत्ता कौंसिल का सदस्य बन गया। 1756 में सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर ~~आक्र~~ आक्रमण किया, वारेन हस्टिंग्स बंदी बना लिया गया किन्तु वह किसी तरह भाग निकला। सिराजुद्दौला को गद्दी से उतार देने के षड्यंत्र में वह भी शामिल था। जब मुर्शिदाबाद में उसकी स्थिति गम्भीर हो गई तो वह अपने साथियों के साथ फाल्टा भाग गया जहाँ उसने एक विधवा अंग्रेज ~~महिला~~ महिला के साथ विवाह कर लिया।

जब मीरजाफर बंगाल का नवाब बना तो वह मुर्शिदाबाद के रेजीडेन्ट का सहायक नियुक्त किया गया। कम्पनी के ~~द्वारा~~

डायरेक्टर इससे प्रसन्न रहते थे अतः 1768 में हेस्टिंग्स मद्रास कौंसिल का सदस्य नियुक्त किया गया। 1772 में वह बंगाल का गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया।

वारेन हेस्टिंग्स ने निम्नलिखित सुधार किए —

(1) प्रशासनिक सुधार

(2) लगान सम्बन्धी सुधार

(3) आर्थिक सुधार

(4) न्यायिक सुधार

(5) वाणिज्य सम्बन्धी सुधार

(6) सार्वजनिक हित के कार्य।

(1) प्रशासनिक सुधार — हेस्टिंग्स ने सबसे पहले द्वैध शासन का अन्त किया। कम्पनी ने दिवानी का काम अपने हाथों में ले लिया तथा बंगाल के नवाब को शासन के कार्यों से मुक्त कर दिया गया और उसे कम्पनी की ओर से 16 लाख रुपया सालाना पेंशन दी जाने लगी। बंगाल का नवाब अभी नाबालिग था अतः हेस्टिंग्स ने मीरजाफर की एक विधवा मुन्नी बेगम को उसकी अभिभाविका तथा नन्द कुमार

ने उमीरदास को उसके घर का प्रबन्धक नियुक्त किया। मुहम्मद रजा तथा सिताब राय जो द्वैध शासन काल में बंगाल तथा बिहार के नाइब दीवान थे उन पर गबन का आरोप लगाकर पदच्युत कर दिया गया। भारतीय कलक्टरों के स्थान पर अंगरेज कलक्टर नियुक्त किए गए।

(2) लगान संबंधी सुधार — कम्पनी को 1765 में बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई लेकिन उसने अपने ऊपर माल गुजारी वसूली का काम नहीं लिया था। यह काम आमीलों को सौंपा गया किन्तु ये आमील मनमाने ढंग से पैसा वसूल करते थे इसकी सुधार के लिए निरीक्षक नियुक्त किए गए। हेस्टिंग्स ने भूमि के लगान का पंचवर्षीय प्रबंध किया। गवर्नर तथा उसकी कौंसिल के लगान-संबंधी कार्य राजस्व-समिति के द्वारा होने लगा। एक दौरा-समिति नियुक्त की गई जिसका काम बंगाल के प्रमुख जिलों में जाकर भूमि का प्रबंध करना था। लगान वसूली के लिए एक अंग्रेज कलक्टर नियुक्त किया गया ~~जिसकी~~ सहायता के लिए एक भारतीय दीवान होता था। एक निश्चित दर निर्धारित कर लगान को सरल बना दिया गया।

(3) आर्थिक सुधार — जिस समय हेस्टिंग्स ने गवर्नर का पद ग्रहण किया कम्पनी की आर्थिक दशा बहुत दयनीय थी। अतः हेस्टिंग्स ने इसको सुधारने के लिए अनेक साधनों को अपनाया। उसने सर्वप्रथम बंगाल के नवाब की पेंशन को कम कर दिया। मुगल सम्राट शाहआलम II को प्रतिवर्ष 25 लाख की पेंशन दी जाती थी जिसे हेस्टिंग्स ने बंद कर दिया क्योंकि वह मुगल सम्राट के साथ मिल चुका था तथा उससे कड़ा और इलाहाबाद के जिले भी ले लिए गए।

1773 में हेस्टिंग्स ने बनारस की संधि की जिसके अनुसार उसने नवाब सुजाउद्दौला को इस शर्त पर सहायता करने का वचन दिया कि वह बनारस का जिला तथा 50 लाख रुपये कम्पनी को देगा।

(4) न्यायिक सुधार — हेस्टिंग्स ने जमींदारों और फौजदारों से न्यायिक अधिकार ले लिया तथा एक दीवानी अदालत और एक फौजदारी अदालत की स्थापना की तथा दोनों अदालतों का क्षेत्राधिकार निश्चित कर दिया गया। प्रत्येक न्यायालय में न्यायाधीशों का पद वैतनिक कर दिया गया ताकि निष्पक्ष रूप से न्याय कर सकें।

हिन्दू तथा मुस्लिम कानूनों का संग्रह किया गया। मुस्लिम कानूनों को संकलित करने में औरंगजेब के फतवा-आलमगिरि की सहायता ली गई।

(5) वाणिज्य सम्बन्धी सुधार — हेस्टिंग्स ने दस्तक प्रथा को बन्द कर व्यापार का द्वार सबके लिए खोल दिया। उस समय बहुत सी चौकियाँ थीं जहाँ व्यापारियों से चुंगी वसूल की जाती थी, जिससे व्यापार को घाटा होता था। हेस्टिंग्स ने — कलकत्ता, हुगली, ढाका, पटना तथा मुर्शिदाबाद की चौकियों को छोड़ कर सारी चौकियाँ तोड़ दीं। नमक, पान, तथा तम्बाकू को छोड़कर शेष सभी वस्तुओं पर $2\frac{1}{2}$% चुंगी रखने दी गई जो भारतीय तथा यूरोपीय सभी व्यापारियों को समान रूप से देनी पड़ती थी। कलकत्ते में एक टकसाल की स्थापना की गई जहाँ एक मूल्य एवं आकार के सिक्के ढाले जाते थे। इससे व्यापार को बहुत लाभ हुआ। हेस्टिंग्स के इन सुधारों से व्यापार जगत में बहुत लाभ हुआ।

(6) सार्वजनिक हित के कार्य — हेस्टिंग्स ने सार्वजनिक हित के भी अनेक कार्यों को किया।

उसने चोर-डाकुओं का दमन किया, जो डाकू पकड़ा जाता था उसे अपने ही गाँव में फांसी लगा दिया जाता था तथा उसके सारे पारिवारिक सदस्यों को दास बना लिया जाता था। सन्यासी नामक डाकुओं तथा लुटेरों ने जनता को बहुत आतंकित कर रखा था। इन डाकुओं के गिरोह में हिन्दू-तथा मुसलमान दोनों शामिल थे। ये धार्मिक रूप धारण कर छोटे-छोटे बच्चों को गाँवों से उठा कर ले जाते थे तथा लूट-मार किया करते थे। हेस्टिंग्स ने सेना भेज कर ऐसे डाकुओं का दमन किया। शांति-व्यवस्था कायम रखने के लिए पुलिस अफसरों को काफी अधिकार दिए गए। विवाह पर चुंगी जो फीस लगती थी हटा दिया गया।

निष्कर्ष —— इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हेस्टिंग्स ने ही सर्वप्रथम भारतीयों के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए सुधार नीति अपनाई। निःसंदेह यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। इन सुधारों के द्वारा भविष्य में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव सुदृढ़ करने में उसने अपना योगदान दिया। इस प्रकार वह कॉर्नवालिस का पथ प्रदर्शक था।

—— X ——

समाप्त